नारी सशक्तिकरणः एक पुनरावलोकन

डॉ0 जय प्रकाश श्रीवास्तव,
शेपा, परिसर निबिया, बच्छाँव, वाराणसी

यदि हम भूत, वर्तमान और भविष्य में स्त्रियों की शक्ति एवं स्थिति को देखें तो यह बात स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है कि ब्रह्माण्ड में तीन ही शक्तियाँ हैं और उन तीनों शक्तियों की मलिका स्त्रियाँ ही हैं, जैसे धन की मलिका लक्ष्मी, शक्ति की मलिका दुर्गा और ज्ञान की मलिका सरस्वती। इनमें हम आज भी आस्था रखते हैं और पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी हमारा विश्वास निरन्तर बना रहेगा। प्रस्तुत प्रपत्र के माध्यम से नारियों की प्राचीनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिककाल में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति को वस्तुपरक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है।

प्रस्तावना

अतीत के भारतीय समाज में महिलाएँ आदर की ही पात्र नहीं थीं वरन् पुरूषों के समकक्ष भी मानी जाती थीं। इस विशाल देश में सभी जगह समाज पुरूष प्रधान ही नहीं था, कुछ भागों में यह स्त्री प्रधान भी था। परिवार का मुखिया चाहे जो रहा हो, नारी का स्थान प्रायः ऊँचा ही रहता था। यदि हम भूत, वर्तमान और भविष्य में स्त्रियों की शक्ति एवं स्थिति को देखें तो यह बात स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है कि ब्रह्माण्ड में तीन ही शक्तियाँ हैं और उन तीनों शक्तियों की मलिका स्त्रियाँ ही हैं, जैसे धन की मलिका लक्ष्मी, शक्ति की मलिका दुर्गा और ज्ञान की मलिका सरस्वती। इनमें हम आज भी आस्था रखते हैं और पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी हमारा विश्वास निरन्तर बना रहेगा। जहाँ तक सामान्य नारी का प्रश्न है वह पति के सभी धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों में बराबर की हैसियत रखती हैं। नारी के बिना कोई भी काम आधा–अधूरा और सामान्य समझा जाता है।

प्राचीन समाज में नारियों की स्थिति

मनु ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि 'देवता वहीं प्रसन्न रहते हैं जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है।' आर्यों के प्रारम्भिक समाज में स्त्रियों की स्थिति सर्वश्रेष्ठ थी, वस्तुतः वैदिक युग में स्त्रियाँ जितनी स्वतंत्र थीं उतनी अन्य किसी युग में नहीं। हम ग्रन्थों एवं कथाओं के माध्यम से भले ही स्त्री को पूजनीय या अभिनन्दनीय कहकर उनकी खोखली स्तुति करते हों, किन्तु व्यावहारिक धरातल

पर हम स्त्री को मात्र भोग्या, पुरूष से बहुत हेय और पदार्थ मानकर चलते हैं।

मध्यकालीन समाज में नारियों की स्थिति

मध्ययुगीन समाज में स्त्रियों की स्थिति में निश्चित रूप से गिरावट आई थी जिसका अनुमान कर्नल टाड के इस कथन से लगाया जा सकता है 'वह दिन पतन का होता है जब एक कन्या जन्म लेती है।' इस धारणा से तत्कालीन समाज भयंकर रूप से ग्रसित था।

स्त्रियों की स्वतंत्रता का हनन इस कदर किया गया जो बँदायूनी के कथन में विकट रूप से दिखता है। 'अकबर ने यह आदेश निकाला था कि यदि कोई स्त्री बिना पर्दे के बाजार में भ्रमण करती है तो उसे वेश्यालय में ले जाया जाय और पेशे को अपनाने के लिए बाध्य किया जाय।'

लड़के और लड़की में अन्तर अकबर के इस कथन से आसानी से लगाया जा सकता है–'यदि मुझे पुत्र की प्राप्ति होती है तो मैं शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर आगरा से पैदल जाऊँगा।'

अगर हम लड़के व लड़की के अन्तर के बारे में आज भी विचार करें तो आज भी लोग लड़कियों की उपेक्षा (थोड़ा अन्तर जरूर हुआ है) वैसा ही करते हैं जैसे अकबर के समय में किया गया।

मुगलकाल में इतनी विषम परिस्थितियाँ विद्यमान थीं फिर भी उसी युग में मीराबाई, नूरजहाँ, जैबुन्निसा, आकाबाई और गुलबदन बेगम उस काल की विदुषी महिलाएँ थीं।

मध्यकाल में ही अकबर से लोहा लेने वाली चाँदबीबी, औरंगजेब की सेना से जूझने वाली मराठा वीरांगना ताराबाई, प्रशासनिक प्रतिभा सम्पन्न अहिल्याबाई होल्कर तथा मातृभाक्ति की प्रतीक और शिवाजी की माँ जीजाबाई ने अनुकरणीय एवं साहसपूर्ण कार्यों से अपने को अमर बना दिया।

मुगलकाल में स्त्रियों ने प्रशासन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, इस प्रभाव के कारण ही कतिपय इतिहासकारों (Narrow Minded) ने इसे 'पेटीकोट गवर्नमेण्ट' का नाम दिया।

आधुनिक समाज में नारियों की स्थिति

हालॉकि आधुनिक युग में स्त्री शोषण के आर्तनाद को कुछ समाज सुधारकों जैसे– स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, राजाराममोहन राय और महात्मा गाँधी आदि ने सुना और इनके प्रयासों से गहरी नींद में सोये भारतीय समाज में थोड़ा सा स्फुरण तो हुआ परन्तु उसने आँखें नहीं खोली, फिर भी उनके बाद से महिलाओं के अधिकारों तथा उनकी गरिमा की मान्यता देने की दिशा में सक्रिय प्रयास प्रारम्भ हो गये।

1975 में संयुक्तराष्ट्र द्वारा महिला दशक मनाया जाना, जिसने भारत सहित विश्व भर के महिलाओं के चिंतन पर क्रान्तिकारी असर डाला।

महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था 'हमारे समाज में स्त्रियों को गुलामों की तरह जीना पड़ता है और उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि वे गुलामों का जीवन जी रही हैं। कुल मिलाकर स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती है।'

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' वाले भारत देश में जन्म से लड़के–लड़की में भेद, जायदाद में बराबरी के अधिकार से वंचित रखना, विधवा पुनर्विवाह निषेध, आर्थिक स्वतंत्रता से वंचित रखना, रूढ़िगत सामाजिक अन्याय, संस्कारग्रस्त उत्पीड़न नारी को निरन्तर सहने पड़ रहे हैं।

आज भी राजस्थान में जैसलमेर जिले की पश्चिमी सीमा पर बसे लगभग एक दर्जन गांवों में भाटी

जाति के परिवारों में लड़कियों की संख्या 50 भी नहीं है। जबकि कुल आबादी 10,000 से अधिक है। सभी लड़कियाँ 10 साल से कम उम्र की हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अब भाटी परिवार में अपनी नवजात कन्याओं की हत्या करने की प्रथा कम हो रही है। आखिरी बार बारात उनके गाँव में कब आयी इस सवाल पर यहाँ के लोग घण्टों में अंदाज लगाते हैं। नारियों के प्रति समाज की मानसिकता बदलने में अभी हम बहुत पीछे हैं।

सामाजिक मूल्यों का ह्रास इतना हो गया है कि विधवा को मिलने वाली जमीन, मकान और जायदाद को परिवार वाले हड़पने की साजिश करते हैं और उस असहाय को न्याय नहीं मिलता। सामाजिक मूल्यों के ह्रास के नये–नये रूपों को आज भी देखा जा सकता है और समाज मूक दर्शक बना रहता है।

समय के साथ–साथ स्त्रियों की स्थिति में सुधार आया है और महिलाओं के लिए नये–नये अवसर जुटाने के लिए श्रीमती रामाबाई रानाडे लेडी बोस, मीकाई जी कामा आदि ने अपने आपको समर्पित कर दिया। अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी और दुर्गाप्रकाशवती पाल ने भूमिगत रहकर स्वाधीनता संग्राम को अपने ढंग से शक्ति प्रदान की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिलाओं को सभी क्षेत्रों में उन्नति के अनगिनत अवसर उपलब्ध होने का ही परिणाम है कि देश में ऊँचे–ऊँचे पदों को भारतीय महिलायें सुशोभित करती चली आ रही हैं।

एनीबेसेन्ट ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्षा, विजय लक्ष्मी पण्डित ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्षा, श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री, सरोजनी नायडू ने पहली महिला राज्यपाल, सुचेता कृपलानी ने पहली महिला मुख्यमंत्री, अन्नाचाड़ी ने पहली महिला न्यायाधीश, आरती शाहा ने इंग्लिश चैनेल तैरकर पार करने वाली पहली भारतीय महिला और बछेन्द्री पाल ने एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला पर्वतारोही होने की ख्याति अर्जित की।

इधर लोक सेवा के लिए पिछले वर्षों में स्त्री रोग विशेषज्ञ डा0 बानू जहाँगीर कोयाजी और 1994 में सार्वजनिक सेवा के लिए जेल महानिरीक्षक श्रीमती किरण बेदी को 'मैगसायसाय' पुरस्कार दिया जाना देश के लिए एक गौरवपूर्ण घटना थी।

1962 में संगठित क्षेत्रों में रोजगार में लगी महिलाओं की संख्या 13.7 लाख थी जो 1989 में बढ़कर 35.7 लाख हो गयी। इससे पता चलता है कि महिलाओं का रोजगार में अंश बढ़ा है। फिर भी केन्द्रीय सरकार में 1988 में राजपत्रित पदों पर महिलाओं की संख्या केवल 4.9 प्रतिशत थी। 1987 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में महिलाओं का प्रतिशत केवल 7.4 प्रतिशत था। भारतीय विदेश सेवा में केवल 9.9 प्रतिशत और भारतीय आर्थिक सेवा में केवल 12.9 प्रतिशत था। 1972 में ये प्रतिशत क्रमशः 6, 1, 9.4 और 4.9 थे।

उपसंहार

आज हमारा देश इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करने की तैयारी में है। भारत सरकार तथा समस्त राज्य शासन महिलाओं के उत्थान को प्राथमिकता दे रहे हैं। देश में पहली बार स्थल, वायु और नौ सेना में महिलाओं को कमीशन प्रदान किया गया है। सरकार ने कुछ शहरों में महिला पुलिस स्टेशन की स्थापना की है। वर्तमान समय में स्थानीय स्तर पर सत्ता में महिलाओं की भागीदारी

सुनिश्चित करने के लिए संविधान के 73वें संशोधन में महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत स्थान सुरक्षित कर दिए हैं। जब देश में यह पूरी तरह लागू हो जायेगा तो देश भर की लगभग 8 लाख महिलाएँ पंच एवं सरपंच होगीं और स्थानीय स्वायत्त शासन का महत्वपूर्ण अंग भी। इस प्रकार भविष्य में सभी कार्यक्रम पूर्णतः लागू हो जाने के उपरान्त स्त्रियों की स्थिति में गुणात्मक सुधार हो जायेगा और अबला की पर्याय बनी स्त्री में सबला के स्पष्ट दर्शन होंगे।

संदर्भ ग्रन्थ

[1] एस.पी. चौबे एवं अखिलेश चौबेः ''फिलोसाफिकल एण्ड सोशियोलॉजिकल फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशन'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005.

[2] डा0 रामशकल पाण्डेयः ''शैक्षिक निबन्ध'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2000.

[3] गुरूसरन दास त्यागीः ''भारत में शिक्षा का विकास'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2000.

[4] डॉ0 के0 पी0 पाण्डेयः ''गांधी चिंतनः एक पुनर्विलोकन'' अन्वेशिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली, 2008

[5] विपिन कुमारः ''वैश्वीकरण एवं महिला सशक्तिकरणः विविध आयाम'' दीप एवं दीप पब्लिकेशन प्रा0लि0, दिल्ली, 2009

[6] शैलेन्द्र सेंगरः ''मध्यकालीन भारत का इतिहास'' अटलांटिक पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005

[7] जे.एल. मेहताः ''मध्यकालीन भारत का वृहद इतिहास–1'' जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004

[8] मैत्रेयी पुष्पाः ''आज की नारी'' सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली

[9] Ashirwadi Lal Srivastava: "*The History of India, 1000 A.D. 1707 A.D.*" Shiv Lal Agrawal Publishers, Agra, 1964.

[10] R.C. Mishra" "*Women Education*" APH Publishing Corporation, New Delhi.

[11] Rekha Mehra: "*Women Empowerment and Economic Development*" Sage Publication, New Delhi, 1997.